e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, सोमवार, 16 सितंबर 2019, आश्विन मास कृष्ण पक्ष द्वितीया, संवत् 2075 विक्रमी वर्ष-12, अंक-328, पृष्ठ-12, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण

शब्द शब्द संघर्ष

DNA
डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/41982 संस्करण : लखनऊ राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक website : www.dnahindi.com डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18

विश्व ओजोन दिवस की अहमियत

ओजोन परत गैस की एक नाजुक ढाल है, जो सूर्य की किरणों के हानिकारक हिस्से से पृथ्वी की रक्षा करती है। इस प्रकार ग्रह पर जीवन को संरक्षित करने में मदद करती है। ओजोन को उसके क्षयकारी पदार्थों के नियंत्रित उपयोग से न केवल भावी पीढ़ियों के लिए ओजोन परत की रक्षा करने में मदद मिलेगी, बल्कि जलवायु परिवर्तन को रोकने हेतु हो रहे वैश्विक प्रयासों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकेगा। ओजोन परत हानिकारक पराबैंगनी विकिरण को पृथ्वी तक पहुंचने से सीमित कर मानव स्वास्थ्य और पारस्थितिक प्रणालियों की रक्षा करती है। ओजोन परत और जलवायु की रक्षा के लिए तीन दशकों से उल्लेखनीय मॉन्ट्रियल अंतरराष्ट्रीय प्रयास यह याद दिलाता है कि लोगों को स्वस्थ रखने हेतु पृथ्वी के चारो तरफ ओजोन परत की मोटाई बनाने में सार्थक प्रयास और इस गति को बनाए रखना नितांत आवश्यक है। गौरतलब है कि रेफ्रिजरेटर, एयरकंडीशनर और कई अन्य उत्पादों में 99 प्रतिशत ओजोन क्षयकारी रसायनों का उपयोग हो रहा था, इसका अन्य विकल्प ढूंढ़ा गया और आगे भी प्रयास जारी है। ओजोन डिप्लेशन का नवीनतम वैज्ञानिक मूल्यांकन साल 2018 में किया गया था, जिसके आंकड़ों से जानकारी मिली कि साल 2000 के बाद से ओजोन परत के कुछ हिस्सों मे प्रति दशक 1.3 फीसदी की दर से बढ़ोतरी हुई है। अनुमानित दरों के मुताबिक उत्तरी गोलार्ध और मध्य अक्षांश पर ओजोन के साल 2030 तक पूरी तरह ठीक हो जाने का अनुमान है। हालांकि यह प्रयास दक्षिणी गोलार्ध पर साल 2050 और ध्रुवीय क्षेत्रों में साल 2060 तक चलेगा। ओजोन परत संरक्षण के प्रयासों ने साल 1990 से साल 2010 तक अनुमानित 135 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर उत्सर्जन रोककर जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में बहुमूल्य योगदान दिया है। इस विश्व ओजोन दिवस पर हमें संकल्प लेना होगा कि विशेष रूप से सतर्क रहकर ओजोन क्षयकारी पदार्थों के किसी भी अवैध स्रोत से निपटने के लिए प्रयास जारी रखेंगे। आवश्यक प्रोटोकॉल बनाए रखने के लिए हमें समय-समय पर जारी संशोधनों का भी तहेदिल से स्वागत व समर्थन करना चाहिए। फिलहाल इसी साल पहली जनवरी से किगली संशोधन लागू हुआ है। हाइड्रोफ्लोरोकार्बन जो शक्तिशाली जलवायु वार्मिंग गैसें हैं, उनको चरणबद्ध रूप में इस संशोधन के जरिए ओजोन परत की रक्षा करते हुए सदी के अंत तक वैश्विक तापमान वृद्धि को 0.4 सेंटीग्रेड तक बचाया जा सकता है। रेफ्रीजरेसन इंडस्ट्री में ऊर्जा दक्षता सुधार करके भी बड़े जलवायु लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं।

● डॉ. भरत राज सिंह
brsinghlko@gmail.com

-लेखक लखनऊ में स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक तकनीकी और प्रभारी वैदिक विज्ञान केंद्र के प्रभारी हैं